



राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का गांधीवादी और राजनीतिक दृष्टिकोण से विश्लेषण

ललिता यादव

शोधार्थी

टांटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर

डा. शिल्पा रानी

सहायक आचार्य

टांटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर

शोध का सारांश

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा व्यवस्था में व्यापक परिवर्तन लाने वाली एक महत्वपूर्ण नीति है, जिसका उद्देश्य शिक्षा को समावेशी, गुणवत्तापूर्ण, बहुविषयक तथा रोजगारोन्मुख बनाना है। यह नीति केवल ज्ञान के हस्तांतरण तक सीमित नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, नैतिक मूल्यों, कौशल विकास तथा राष्ट्रीय चेतना के निर्माण पर भी बल देती है। महात्मा गांधी ने शिक्षा को व्यक्ति के सर्वांगीण विकास का माध्यम माना था। उनके अनुसार शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो व्यक्ति को आत्मनिर्भर, नैतिक, श्रमशील एवं सामाजिक उत्तरदायित्व से युक्त बनाए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में मातृभाषा में शिक्षा, कौशल विकास, अनुभवात्मक अधिगम, नैतिक शिक्षा, भारतीय ज्ञान परंपरा तथा आत्मनिर्भरता पर दिया गया विशेष बल गांधीवादी शिक्षा-दर्शन के अनुरूप प्रतीत होता है।

राजनीतिक दृष्टिकोण से भी यह नीति लोकतांत्रिक मूल्यों, समान अवसर, सामाजिक न्याय, राष्ट्रीय एकता तथा संवैधानिक आदर्शों को सुदृढ़ करने का प्रयास करती है। यह विद्यार्थियों में उत्तरदायी नागरिकता, आलोचनात्मक चिंतन तथा राष्ट्रहित की भावना विकसित करने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अतः राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को गांधीवादी एवं राजनीतिक दोनों दृष्टिकोणों से भारतीय शिक्षा के पुनर्गठन की एक महत्वपूर्ण पहल के रूप में देखा जा सकता है।

शोध कुंजी

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, गांधीवाद, नई तालीम, लोकतंत्र, संवैधानिक मूल्य, आत्मनिर्भरता, मातृभाषा, कौशल विकास, मूल्यपरक शिक्षा, राजनीतिक दृष्टिकोण आदि।

शोध की प्रस्तावना



शिक्षा किसी भी राष्ट्र की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक प्रगति का आधार होती है। किसी देश की शिक्षा व्यवस्था उसके नागरिकों के व्यक्तित्व, चरित्र, नेतृत्व क्षमता तथा लोकतांत्रिक चेतना को निर्धारित करती है। भारत जैसे विशाल एवं विविधतापूर्ण देश में शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं, बल्कि ऐसे नागरिकों का निर्माण करना भी है जो नैतिक, उत्तरदायी, संवेदनशील तथा राष्ट्र के प्रति समर्पित हों। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए वर्ष 2020 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू की गई, जिसने भारतीय शिक्षा प्रणाली में व्यापक एवं दूरगामी परिवर्तन प्रस्तावित किए।

महात्मा गांधी ने शिक्षा को जीवनोपयोगी, श्रम-आधारित तथा मूल्यपरक बनाने पर बल दिया था। उनका मानना था कि शिक्षा व्यक्ति को केवल रोजगार प्राप्त करने योग्य न बनाए, बल्कि उसे आत्मनिर्भर, चरित्रवान एवं समाजोपयोगी भी बनाए। गांधीजी की 'एनई तालीम' का मूल आधार कार्य के माध्यम से शिक्षा, मातृभाषा का प्रयोग, नैतिक मूल्यों का विकास तथा आत्मनिर्भरता था। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में इन सभी तत्वों का प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष समावेश दिखाई देता है। प्रारंभिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा, कौशल विकास, व्यावसायिक शिक्षा, भारतीय ज्ञान परंपरा तथा समग्र विकास पर दिया गया बल गांधीवादी चिंतन की प्रासंगिकता को पुनः स्थापित करता है।

राजनीतिक दृष्टिकोण से शिक्षा लोकतांत्रिक व्यवस्था का आधार मानी जाती है। लोकतंत्र तभी सफल हो सकता है जब उसके नागरिक शिक्षित, जागरूक तथा संवैधानिक मूल्यों के प्रति प्रतिबद्ध हों। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 विद्यार्थियों में संविधान के मूल आदर्शों, समानता, न्याय, स्वतंत्रता, बंधुत्व, राष्ट्रीय एकता तथा उत्तरदायी नागरिकता के विकास पर विशेष बल देती है। साथ ही यह शिक्षा के सार्वभौमिककरण, लैंगिक समानता, सामाजिक समावेशन तथा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की उपलब्धता को भी सुनिश्चित करने का प्रयास करती है। इस प्रकार यह नीति शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन एवं लोकतांत्रिक सशक्तिकरण का प्रभावी माध्यम बनाती है।

अतः राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का गांधीवादी एवं राजनीतिक दृष्टिकोण से अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि यह नीति भारतीय परंपरा एवं आधुनिक आवश्यकताओं के मध्य संतुलन स्थापित करते हुए ऐसे नागरिकों का निर्माण करना चाहती है जो



ज्ञानवान होने के साथ-साथ नैतिक, उत्तरदायी, आत्मनिर्भर तथा लोकतांत्रिक मूल्यों से युक्त हों।

शोध के सोपान

प्रस्तुत शोध-पत्र वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है। इसमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रावधानों का अध्ययन गांधीवादी शिक्षा-दर्शन तथा राजनीतिक सिद्धांतों के संदर्भ में किया गया है। अध्ययन के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आधिकारिक दस्तावेज, महात्मा गांधी के शिक्षा संबंधी विचार, विभिन्न पुस्तकों, शोध-पत्रों तथा पत्रिकाओं का अध्ययन किया गया है। उपलब्ध तथ्यों का तुलनात्मक एवं व्याख्यात्मक विश्लेषण करते हुए यह समझने का प्रयास किया गया है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति गांधीवादी मूल्यों तथा लोकतांत्रिक आदर्शों को किस सीमा तक व्यवहार में उतारने में सक्षम है। अध्ययन का उद्देश्य नीति के गुण-दोषों की आलोचनात्मक समीक्षा करना न होकर उसके वैचारिक आधार एवं सामाजिक-राजनीतिक महत्व को समझना है।

शोध का महत्व

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का अध्ययन गांधीवादी एवं राजनीतिक दृष्टिकोण से इसलिए अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह नीति केवल शैक्षणिक सुधार का दस्तावेज नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण का व्यापक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है। गांधीजी द्वारा प्रतिपादित स्वावलंबन, श्रम की गरिमा, नैतिकता, सत्य, अहिंसा तथा मातृभाषा में शिक्षा जैसे सिद्धांत आज भी भारतीय समाज के लिए प्रासंगिक हैं। नई शिक्षा नीति इन मूल्यों को आधुनिक शिक्षा प्रणाली के साथ जोड़ने का प्रयास करती है। दूसरी ओर राजनीतिक दृष्टि से यह नीति लोकतांत्रिक मूल्यों, संवैधानिक कर्तव्यों, समान अवसर, सामाजिक न्याय तथा राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ करने का माध्यम बनती है। यह विद्यार्थियों में आलोचनात्मक चिंतन, नेतृत्व क्षमता, उत्तरदायित्व तथा सक्रिय नागरिकता का विकास करती है। इसलिए यह अध्ययन शिक्षा, राजनीति तथा गांधीवादी विचारधारा के अंतर्संबंधों को समझने के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध होता है।

शोध के उद्देश्य



प्रस्तुत शोध-पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं -

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का गांधीवादी दृष्टिकोण से विश्लेषण करना।
2. गांधीजी के शिक्षा-दर्शन एवं नई शिक्षा नीति के मध्य समानताओं का अध्ययन करना।
3. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के राजनीतिक आयामों का मूल्यांकन करना।
4. लोकतांत्रिक एवं संवैधानिक मूल्यों के विकास में इस नीति की भूमिका का अध्ययन करना।
5. आत्मनिर्भरता, कौशल विकास तथा मूल्यपरक शिक्षा के संदर्भ में नीति की उपयोगिता का विश्लेषण करना।
6. भारतीय शिक्षा प्रणाली में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की प्रासंगिकता को स्पष्ट करना।

शोध का निष्कर्ष

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा व्यवस्था को अधिक समावेशी, लचीली, मूल्यपरक एवं कौशल-आधारित बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। गांधीवादी दृष्टिकोण से यह नीति शिक्षा को जीवन, श्रम, नैतिकता एवं आत्मनिर्भरता से जोड़ती है, जो महात्मा गांधी की 'नई तालीम' की मूल भावना के अनुरूप है। मातृभाषा में शिक्षा, अनुभवात्मक अधिगम, व्यावसायिक प्रशिक्षण, भारतीय ज्ञान परंपरा तथा चरित्र निर्माण पर दिया गया बल इस तथ्य को प्रमाणित करता है कि नीति भारतीय चिंतन की मूल भावना को आधुनिक आवश्यकताओं के साथ समन्वित करने का प्रयास करती है।

राजनीतिक दृष्टिकोण से यह नीति लोकतांत्रिक मूल्यों, समान अवसर, सामाजिक न्याय, संवैधानिक आदर्शों तथा उत्तरदायी नागरिकता के विकास का प्रभावी माध्यम है। यह विद्यार्थियों में राष्ट्रीय चेतना, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा लोकतांत्रिक सहभागिता की भावना विकसित करने का प्रयास करती है। यद्यपि इसके प्रभावी क्रियान्वयन के लिए पर्याप्त संसाधन, प्रशिक्षित शिक्षक एवं सभी वर्गों तक समान पहुँच सुनिश्चित करना आवश्यक है, फिर भी यह कहा जा सकता है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 गांधीवादी



विचारधारा एवं भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था के अनुरूप एक सशक्त, नैतिक एवं आत्मनिर्भर समाज के निर्माण की दिशा में एक दूरदर्शी एवं महत्वपूर्ण कदम है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. भारत सरकार: राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, मानव संसाधन विकास मंत्रालय (अब शिक्षा मंत्रालय)।
2. शर्मा, वी.पी.: नई शिक्षा नीति 2020 उद्देश्य, कार्यान्वयन और संभावनाएं, शिल्पी प्रकाशन, दिल्ली।
3. ठाकुर, बी.डी.: भारत में शिक्षा का विकास और समस्याएं, वपांे प्रकाशन, 2021।
4. अंशुमान, प्रदीप: शिक्षा और सत्ता: विचारधाराओं का संघर्ष, पेंगुइन हिंदी, 2020।
5. पांडेय, शरद: भारतीय शिक्षा व्यवस्था में राजनीति का हस्तक्षेप, नवचेतना पब्लिकेशन।
6. शर्मा, आलोक: शिक्षा और राजनीति: एक आलोचनात्मक अध्ययन, अर्चना प्रकाशन।
7. "राजनीति और शिक्षा नीति: विचारधाराओं का प्रभाव", भारतीय समाजशास्त्र पत्रिका, 2022
8. "राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और सामाजिक न्याय", सामाजिक परिवर्तन, दिसंबर 2020